



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	30.9.22	3	6-8

अच्छे स्वास्थ्य व प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए मोटा अनाज उगाएं : वीसी

भास्कर न्यूज़ | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने कहा कि भावी पीढ़ियों के बेहतर स्वास्थ्य तथा प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रूप से संरक्षित करने के लिए वर्तमान कृषि स्वरूप व खेती की पद्धतियों में मौसम और प्रकृति के अनुकूल व्यापक बदलाव की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग के माइनर मिल्लेट्स (मोटा अनाज) आधारित प्रदर्शनी प्लॉटों व शोध क्षेत्र का अवलोकन करने के दौरान उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से जहां एक तरफ हमारी प्रकृति व वातावरण में असामान्य बदलाव



एचएयू के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज अनुसंधान क्षेत्र में मोटे अनाज की फसलों का अवलोकन करते हुए।

दिखाई दे रहा है। वहीं दूसरी ओर लगातार कृषि रसायनों व खादों के प्रयोग से हमारे खाद्यान जहर युक्त होते जा रहे हैं। इसका परिणाम है कि हर आयु के व्यक्तियों और पशुओं में तरह तरह की भयानक बीमारियां उत्पन्न हो रही हैं जो इस धरती पर मानव जीवन के अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा है।

कुलपति ने कहा इस स्थिति से बचने के लिए वर्तमान फसल चक्रों में बदलाव करके नए फसल विविधिकरण के लिए हमारी परम्परागत प्राचीन मोटे व छोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी, सावंक, छोटी कंगनी, कुटकी आदि को पुनः अपनाता होगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

हरि भूमि

दिनांक

30.9.22

पृष्ठ संख्या

9

कॉलम

4-8

माइनर मिल्लेट्स आधारित प्रदर्शनी प्लाटों व शोध क्षेत्र का अवलोकन

अच्छे स्वास्थ्य के लिए किसान मोटा अनाज उगाएं : प्रो. काम्बोज

हरिभूमि न्यूज़ | हिंसार



हिंसार। अनुसंधान क्षेत्र में मोटे अनाज की फसलों का अवलोकन करते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज।

मोटे अनाज के यह हैं स्वास्थ्यवर्धक गुण

इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के ज्यूरिस्टान डॉ. एस्के पाठुजा तथा अन्य वैज्ञानिक डॉ. एके दास ने कहा कि अधिकतर मिल्लेट्स पानी की कमी व शुष्क क्षेत्रों में उच्च तापमान की अवस्था में आसानी से उगाए जा सकते हैं। उन्होंने कहा रागी (फिंगर मिल्लेट) कैल्शियम व पोटेशियम का सबसे बेहतरीन स्रोत है वहीं केज (प्रोसो मिल्लेट) और कुटकी (लिटिल मिल्लेट) शिटिक एसिड, फाइबर, फाइटोस और एंजियो प्रोटेक्टिव से भरपूर होते हैं। कजली (फॉक्सटेल मिल्लेट) हमारी प्राचीन फसलों में से एक है तथा इसमें बीटा कैरोटिन, शिटिक और अजिन राइब प्रोटीन मात्रा में पाए जाते हैं। यह विशेष तौर पर बच्चों और गर्भवती महिलाओं के लिए लाभदायक है।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि भावी पीढ़ियों के बेहतर स्वास्थ्य तथा प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रूप से संरक्षित करने के लिए वर्तमान कृषि स्वरूप व खेती की पद्धतियों में मौसम और प्रकृति के अनुकूल व्यापक बदलाव करने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग के माइनर मिल्लेट्स (मोटा अनाज) आधारित प्रदर्शनी प्लाटों व शोध क्षेत्र का अवलोकन करने के दौरान उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से जहां एक ओर हमारी प्रकृति व वातावरण में असामान्य बदलाव दिखाई दे रहा है वहीं दूसरी ओर लगातार कृषि रसायनों व खादों के प्रयोग से हमारे खाद्यान्न जहर युक्त होते जा रहे हैं। इसी का परिणाम है कि हर आयु के व्यक्तियों और पशुओं में भयावह बीमारियां उत्पन्न हो रही हैं जोकि इस धरती पर मानव जीवन के अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा है।

कुलपति ने कहा इस स्थिति से बचने के लिए वर्तमान फसल चक्रों में बदलाव करके नए फसल विविधकरण के लिए हमारी परम्परागत प्राचीन मोटे तथा छोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी, साबिक, छोटी कंगनी, कुटकी आदि को पुनः अपनाया जाएगा। जहां एक ओर ये छोटे व मोटे अनाज वाली फसलें कम पानी तथा थोड़े दिन में तैयार हो जाती हैं। वहीं यह

वर्ष 2023 अन्तरराष्ट्रीय मिल्लेट वर्ष घोषित

प्रो. काम्बोज ने कहा कि वैश्विक स्तर पर इन मिल्लेट्स फसलों के महत्व व भविष्य को देखते हुए केंद्र सरकार के विवेक पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने आगामी वर्ष 2023 को अंतरराष्ट्रीय मिल्लेट वर्ष घोषित किया है जोकि आम आदमी को इन मोटे तथा छोटे अनाज वाली फसलों (मिल्लेट्स) के प्रति परिचित करने में कारगर होगा। इस दौरान उन्होंने वैज्ञानिकों से विभिन्न प्रकार के माइनर मिल्लेट्स की संबंधित सस्य क्रियाओं तथा इनके प्रजनन के बारे में विस्तार से चर्चा की तथा इस विषय पर विस्तृत शोध करने के लिए प्रेरित किया।

कीटाणुरोधी होने के साथ पोषक तत्वों में भी भरपूर होती हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सप्ताहवार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दिनांक 30.9.22	30.9.22	3	2-6

वातावरण में असामान्य बदलाव से उत्पन्न हो रही बीमारियां

जामरुण संवाददाता, हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज खैरवार को सस्य विज्ञान विभाग के माइनर मिल्लेट्स (मोटा अनाज) आधारित प्रदर्शनी फ्लार्टों व शोध क्षेत्र का निरीक्षण करने पहुंचे।

यहां उन्होंने बताया कि वातावरण में असामान्य बदलाव से इंसानों और पशुओं में गंभीर बीमारियां पनप रही हैं। दूसरी ओर लगातार कृषि रसायनों व खादों के प्रयोग से हमारे खाद्यान जहर युक्त होते जा रहे हैं। यह स्थिति मानव जीवन के अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा है। इस स्थिति से बचने के लिए वर्तमान फसल चक्रों में बदलाव करके नए फसल विविधिकरण के लिए हमारी परम्परागत प्राचीन मोटे व छोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी, सावंक, छोटी



अनुसंधान क्षेत्र में मोटे अनाज की फसलों का अवलोकन करते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज। उन्होंने मोटे अनाज को दोबारा अपनाने का आह्वान किया।

कंगनी, कुटकी आदि को दोबारा अपनाना होगा। जहां एक ओर ये छोटे व मोटे अनाज वाली फसलें कम पानी व थोड़े दिन में तैयार हो जाती हैं वहीं दूसरी तरफ ये कीटाणु रोधी होने के साथ साथ पोषक तत्वों

में भी भरपूर होती हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2023 को अंतरराष्ट्रीय मिल्लेट वर्ष किया घोषित : प्रो. काम्बोज ने कहा वैश्विक स्तर पर इन मिल्लेट्स फसलों के महत्व व भविष्य को देखते हुए

भारत सरकार के निवेदन पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने आगामी वर्ष 2023 को 'अंतरराष्ट्रीय मिल्लेट वर्ष' घोषित किया है जोकि आम आदमी को इन मोटे तथा छोटे अनाज वाली फसलों (मिल्लेट्स) के प्रति प्रेरित करने में कारगर साबित होगा। इस दौरान उन्होंने वैज्ञानिकों से विभिन्न प्रकार के माइनर मिल्लेट्स की संभावित सस्य क्रियाओं व इनके प्रसंस्करण के बारे में विस्तार से चर्चा की तथा इस विषय पर अधिक से अधिक शोध करने के लिए प्रेरित किया।

मोटे अनाज के यह हैं स्वास्थ्यवर्धक गुण : इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एसके पाहुजा व सस्य वैज्ञानिक डा. एके ढाका ने कहा कि अधिकतर मिल्लेट्स पानी की कमी व शुष्क क्षेत्रों में उच्च तापमान की अवस्था में आसानी से उगाये जा सकते हैं। उन्होंने कहा रागी (फिंगर

मिल्लेट) कैल्शियम व पोटेशियम का सबसे बेहतरीन स्रोत है वहीं घेना (प्रोसो मिल्लेट) और कुटकी (लिटिल मिल्लेट) विटामिन बी-6, फास्फोरस, फाइबर तथा एमिनो एसिड से भरपूर होते हैं। कंगनी (फॉक्सटेल मिल्लेट) हमारी प्राचीन फसलों में से एक है तथा इसमें बीटा कैरोटिन, विटामिन और खनिज तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। यह विशेष तौर पर बच्चों और गर्भवती महिलाओं के लिए लाभप्रद है। कोडो मिल्लेट औषधीय गुणों से भरपूर है और यह काफू और पित्त दोष को शांत करता है तथा इसमें बैक्टीरिया व जलन रोधी गुण होने के कारण लाभप्रद है। इसको खून शोधक व तंत्रिका तंत्र को मजबूत रखने के लिए भी प्रयोग में लिया जाता है। इनके अतिरिक्त सावंक व हरी कंगनी भी पोषिक होने के साथ औषधीय गुणों से भरपूर हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

उमर उजाला

दिनांक

30.9.22

पृष्ठ संख्या

3

कॉलम

3-4

संसाधनों को संरक्षित करने के लिए खेती की पद्धतियों में बदलाव की जरूरत : प्रो. कांबोज

माई मिटी रिपोर्ट

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि भावी पीढ़ियों के बेहतर स्वास्थ्य तथा प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रूप से संरक्षित करने के लिए खेती की पद्धतियों में व्यापक बदलाव की आवश्यकता है।

विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग के माइनर मिल्लेट्स (मोटा अनाज) आधारित प्रदर्शनी प्लाटों व शोध क्षेत्र का अवलोकन करने के दौरान उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से वातावरण में असामान्य बदलाव दिखाई दे रहा है। दूसरी ओर लगातार कृषि रसायन व खाद के प्रयोग से हमारे खाद्यान जहर युक्त होते जा रहे हैं। हर आयु के व्यक्तियों और पशुओं में तरह-तरह की भयानक बीमारियां

उत्पन्न हो रही हैं। इस स्थिति से बचने के लिए वर्तमान फसल चक्रों में बदलाव करके नए फसल विविधिकरण हेतु हमारी परंपरागत प्राचीन मोटे व छोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी, साबक, छोटी कंगनी, कुटकी आदि को पुनः अपनाया होगा।

उन्होंने कहा कि वैश्विक स्तर पर इन मिल्लेट्स फसलों के महत्व व भविष्य को देखते हुए भारत सरकार के निवेदन पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने आगामी वर्ष 2023 को 'अंतरराष्ट्रीय मिल्लेट वर्ष' घोषित किया है।

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा व सस्य वैज्ञानिक डॉ. एके डाका ने कहा कि रागी (फिंगर मिल्लेट) कैल्शियम व पोटेशियम का सबसे बेहतरीन स्रोत है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	29.09.2022	--	--

अच्छे स्वास्थ्य व प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतु मोटा अनाज उगाएँ किसान : प्रो. बी.आर. काम्बोज

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने कहा कि भावी पीढ़ियों के बेहतर स्वास्थ्य तथा प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रूप से संरक्षित करने के लिए वर्तमान कृषि स्वरूप व खेती की पद्धतियों में मौसम और प्रकृति के अनुकूल व्यापक बदलाव करने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग के माइनर मिश्रितस (मोटा अनाज) आधारित प्रदर्शनी प्लाटों व शोध क्षेत्र का अवलोकन करने के दौरान उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से जहाँ एक ओर हमारी प्रकृति व वातावरण में असामान्य बदलाव दिखाई दे रहा है वहीं दूसरी ओर लगातार कृषि रसायनों व खादों के प्रयोग से हमारे खाद्यान्न गहरा युक्त होते जा रहे हैं। इसी का परिणाम है कि हर आयु के व्यक्तियों और पशुओं में तरह तरह की भयानक बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं जोकि इस धरती पर मानव जीवन के अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा है। कुलपति ने कहा इस स्थिति से बचने के लिए वर्तमान फसल चक्रों में बदलाव करके नए फसल विविधिकरण हेतु हमारी परम्परागत प्राचीन मोटे व छोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी, सावंक, छोटी कंगनी, कुटकी आदि को पुनः अपनाया होगा। जहाँ एक ओर ये छोटे व मोटे अनाज वाली फसलें कम पानी व थोड़े दिन में तैयार हो जाती हैं वहीं दूसरी तरफ ये कोटाणु रोधी होने के साथ साथ पोषक तत्वों में भी भरपूर होती हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2023 को 'अन्तर्राष्ट्रीय मिश्रित



वर्ष' किया घोषित

प्रो. काम्बोज ने कहा वैश्विक स्तर पर इन मिलेट्स फसलों के महत्व व भविष्य को देखते हुए भारत सरकार के निवेदन पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने आगामी वर्ष 2023 को 'अन्तर्राष्ट्रीय मिश्रित वर्ष' घोषित किया है जोकि आम आदमी को इन मोटे तथा छोटे अनाज वाली फसलों (मिश्रितस) के प्रति प्रेरित करने में कारगर साबित होगा। इस दौरान उन्होंने वैज्ञानिकों से विभिन्न प्रकार के माइनर मिलेट्स की संभावित सस्य क्रियाओं व इनके प्रसंस्करण के बारे में विस्तार से बर्चा की तथा इस विषय पर अधिक से अधिक शोध करने के लिए प्रेरित किया।

मोटे अनाज के यह हैं स्वास्थ्यवर्धक गुण इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस. के. पाहुजा व सस्य वैज्ञानिक डॉ. ए. के. ढाका ने कहा कि अधिकांश मिश्रितस पानी की कमी व शुष्क क्षेत्रों में उच्च

तापमान की अवस्था में आसानी से उगाये जा सकते हैं। उन्होंने कहा रागी (फिंगर मिश्रित) कैल्शियम व पोटेशियम का सबसे बेहतर स्रोत है वहीं चेना (प्रोसो मिश्रित) और कुटकी (लिटिल मिश्रित) विटामिन बी-6, फास्फोरस, फाइबर तथा एमिनो एसिड से भरपूर होते हैं। कंगनी (फॉक्सटेल मिश्रित) हमारी प्राचीन फसलों में से एक है तथा इसमें बीटा कैरोटिन, विटामिन और खनिज तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। यह विशेष तौर पर बच्चों और गर्भवती महिलाओं के लिए लाभप्रद है। कोदो मिश्रित औषधीय गुणों से भरपूर है और यह कफ और पित्त दोष को शांत करता है तथा इसमें बैक्टीरिया व जलन रोधी गुण होने के कारण लाभप्रद है। इसको चूने शोषक व तंत्रिका तंत्र को मजबूत रखने हेतु भी प्रयोग में लिया जाता है। इनके अतिरिक्त सावंक व हरी कंगनी भी पोषिक होने के साथ औषधीय गुणों से भरपूर हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्पन्न पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
निराशा 2022	29.09.2022	--	--

अच्छे स्वास्थ्य के लिए मोटा अनाज उगाएं किसान : वीसी



चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने कहा कि भावी पीढ़ियों के बेहतर स्वास्थ्य तथा प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रूप से संरक्षित करने के लिए वर्तमान कृषि स्वरूप व खेती की पद्धतियों में मौसम और प्रकृति के अनुकूल व्यापक बदलाव करने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग के माहिर मिश्र (मोटा अनाज) आधारित प्रदर्शनी प्लाटों व शोध क्षेत्र का अवलोकन करने के दौरान उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से जहाँ एक ओर हमारी प्रकृति व वातावरण में असामान्य बदलाव दिखाई दे

मोटे अनाज में हैं ये स्वास्थ्यवर्धक गुण

इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस. के. पाहुजा व सस्य वैज्ञानिक डॉ. ए. के. हाका ने कहा कि अधिकतर मिश्रित पानी की कमी व शुष्क क्षेत्रों में उच्च तापमान की अवस्था में आसानी से उगाये जा सकते हैं। उन्होंने कहा रागी (फिंगर मिश्रित) कैल्शियम व पोटेशियम का सबसे बेहतरीन स्रोत है वहीं चेना (प्रोसो मिश्रित) और कुटकी (लिटिल मिश्रित) विटामिन बी-6, फास्फोरस, फाइबर तथा एमिनो एसिड से भरपूर होते हैं। कंगनी (फॉक्सटेल मिश्रित) हमारी प्राचीन फसलों में से एक है तथा इसमें जोटा केरोटिन, विटामिन और खनिज तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। यह विशेष तौर पर बच्चों और गर्भवती महिलाओं के लिए लाभप्रद है। कोखे मिश्रित औषधीय गुणों से भरपूर है और यह कफ और पित्त दोष को शांत करता है तथा इसमें बैक्टीरिया व जलन रोधी गुण होने के कारण लाभप्रद है। इसको खून शोधक व तंत्रिका तंत्र को मजबूत रखने हेतु भी प्रयोग में लिया जाता है। इनके अतिरिक्त सावंक व हरी कंगनी भी पोष्टिक होने के साथ औषधीय गुणों से भरपूर हैं।

रहा है वहीं दूसरी ओर लगातार कृषि रसायनों व खादों के प्रयोग से हमारे खाद्यान जहर युक्त होते जा रहे हैं। इसी का परिणाम है कि हर आयु के व्यक्तियों और पशुओं में तरह तरह की भयानक बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं जोकि इस धरती पर मानव जीवन के अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा है। कुलपति ने कहा इस स्थिति से बचने के लिए वर्तमान फसल चक्रों में बदलाव

करके नए फसल विविधकरण हेतु हमारी परम्परागत प्राचीन मोटे व छोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी, सावंक, छोटी कंगनी, कुटकी आदि को पुनः अपनाया होगा। जहाँ एक ओर ये छोटे व मोटे अनाज वाली फसलें कम पानी व थोड़े दिन में तैयार हो जाती हैं वहीं दूसरी तरफ ये कौटाणु रोधी होने के साथ साथ पोषक तत्वों में भी भरपूर होती हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
क्रांति न्यूज	29.09.2022	--	--

अच्छे स्वास्थ्य व प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतू मोटा अनाज उगाएं किसान: प्रो. बी.आर. काम्बोज

हांसी क्रांति न्यूज

हिसार, : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने कहा कि भावी पीढ़ियों के बेहतर स्वास्थ्य तथा प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रूप से संरक्षित करने के लिए वर्तमान कृषि स्वरूप व खेती की पद्धतियों में मौसम और प्रकृति के अनुकूल व्यापक बदलाव करने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग के माइनर मिश्लेटस (मोटा अनाज) आधारित प्रदर्शनी प्लाटों व शोध क्षेत्र का अवलोकन करने के दौरान उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के अड्डत्यधिक दोहन से जहाँ एक ओर हमारी प्रकृति व वातावरण में असामान्य बदलाव दिखाई



दे रहा है वहीं दूसरी ओर लगातार कृषि रसायनों व खादों के प्रयोग से हमारे खाद्यान्न जहर युक्त होते जा रहे हैं। इसी का परिणाम है कि हर आयु के व्यक्तियों और पशुओं में तरह तरह की भयानक बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं जोकि इस धरती पर मानव जीवन के अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा है। कुलपति ने कहा इस स्थिति से बचने के लिए वर्तमान फसल चक्रों में बदलाव करके

नए फसल विविधिकरण हेतु हमारी परम्परागत प्राचीन मोटे व छोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी, सावंक, छोटी कंगनी, कुटकी आदि को पुनः अपनाना होगा। जहाँ एक ओर ये छोटे व मोटे अनाज वाली फसलें कम पानी व थोड़े दिन में तैयार हो जाती हैं वहीं दूसरी तरफ ये कीटाणु रोधी होने के साथ साथ पोषक तत्वों में भी भरपूर होती हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम
पंजाब मेसरी

दिनांक
30.9.22

पृष्ठ संख्या
2

कॉलम
3-6

अच्छे स्वास्थ्य व प्राकृतिक संसाधन संरक्षण के लिए मोटा अनाज उगाएं किसान : कुलपति

हिसार, 29 सितम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने कहा कि भावी पीढ़ियों के बेहतर स्वास्थ्य तथा प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रूप से संरक्षित करने के लिए वर्तमान कृषि स्वरूप व खेती की पद्धतियों में मौसम और प्रकृति के अनुकूल व्यापक बदलाव करने की आवश्यकता है।

विश्वविद्यालय के समय विज्ञान विभाग के माइनर मिनेटस (मोटा अनाज) आधारित प्रदर्शनी प्लाटों व शोध क्षेत्र का अवलोकन करने के दौरान कुलपति ने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से जहाँ एक ओर हमारी प्रकृति व वातावरण में असामान्य बदलाव दिखाई दे रहा है, वहीं दूसरी ओर लगातार कृषि रसायनों व खादों के प्रयोग से हमारे खाद्यन जहर युक्त होते जा रहे हैं। इसी का परिणाम है कि हर आयु के



अनुसंधान क्षेत्र में मोटे अनाज की फसलों का अवलोकन करते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

व्यक्तियों और पशुओं में तरह तरह की भयानक बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं, जोकि इस धरती पर मानव जीवन के अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा है।

कुलपति ने कहा इस स्थिति से बचने के लिए वर्तमान फसल चक्रों में बदलाव करके नए फसल विविधकरण हेतु हमारी परम्परागत प्राचीन मोटे व छोटे अनाज वाली

फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी, सावंक, छोटी कंगनी, कुटकी आदि को पुनः अपनाना होगा। जहाँ एक ओर ये छोटे व मोटे अनाज वाली फसलें कम पानी व थोड़े दिन में तैयार हो जाती हैं, वहीं दूसरी तरफ ये कीटाणु रोधी होने के साथ-साथ पोषक तत्वों में भी भरपूर होती हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2023 को 'अन्तर्राष्ट्रीय मिनेट वर्ष' किया घोषित

प्रो. काम्बोज ने कहा वैश्विक स्तर पर इन मिनेटस फसलों के महत्व व भविष्य को देखते हुए भारत सरकार के निवेदन पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने आगामी वर्ष 2023 को 'अन्तर्राष्ट्रीय मिनेट वर्ष' घोषित किया है, जोकि आम आदमी को इन मोटे तथा छोटे अनाज वाली फसलों (मिनेटस) के प्रति प्रेरित करने में कारगर साबित होगा।

इस दौरान उन्होंने वैज्ञानिकों से विभिन्न प्रकार के माइनर मिनेटस की संभावित सस्य क्रियाओं व इनके प्रसंस्करण के बारे में विस्तार से चर्चा की तथा इस विषय पर अधिक से अधिक शोध करने के लिए प्रेरित किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
लक्ष्मी दूर	29.09.2022	--	--

'बच्चों और गर्भवती महिलाओं के लिए लाभप्रद है कंगनी'

नभ-छोर न्यूज ११ 29 सितंबर
हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि भावी पीढ़ियों के बेहतर स्वास्थ्य तथा प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रूप से संरक्षित करने के लिए वर्तमान कृषि स्वरूप व खेती की पद्धतियों में मौसम और प्रकृति के अनुकूल व्यापक बदलाव करने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय के शस्य विज्ञान विभाग के माइनर मिल्लेटस (मोटा अनाज) पर आधारित प्रदर्शनी का अवलोकन करने के दौरान उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से जहाँ एक ओर हमारी प्रकृति व वातावरण में असामान्य बदलाव दिखाई दे रहा है वहीं दूसरी ओर लगातार कृषि रसायनों व खादों के प्रयोग से हमारे खाद्यान

जहर युक्त होते जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि इसी का परिणाम है कि हर आयु के व्यक्तियों और पशुओं में तरह-तरह की भयानक बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं जैसा कि इस धरती पर मानव जीवन के अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा है। कुलपति ने कहा इस स्थिति से बचने के लिए वर्तमान फसल चक्रों में बदलाव करके नए फसल विविधिकरण हेतु हमारी परम्परागत प्राचीन मोटे व छोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी, सावंक, छोटी कंगनी, कुटकी आदि को पुनः अपनाना होगा। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा व सस्य वैज्ञानिक डॉ. एके ढाका ने कहा कि अधिकतर मिल्लेटस पानी की कमी व शुष्क क्षेत्रों में उच्च तापमान की अवस्था में

आसानी से उगाये जा सकते हैं। उन्होंने कहा रागी (फिंगर मिल्लेट) कैल्शियम व पोटेशियम का सबसे बेहतरीन स्रोत है वहीं चेन्ना (प्रोसो मिल्लेट) और कुटकी (लिटिल मिल्लेट) विटामिन बी-6, फास्फोरस, फाइबर तथा एमिनो एसिड से भरपूर होते हैं। कंगनी (फॉक्सटेल मिल्लेट) हमारी प्राचीन फसलों में से एक है तथा इसमें बीटा कैरोटिन, विटामिन और खनिज तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। यह विशेष तौर पर बच्चों और गर्भवती महिलाओं के लिए लाभप्रद है। कोडो मिल्लेट औषधीय गुणों से भरपूर है और यह कफ और पित्त दोष को शांत करता है तथा इसमें बैक्टीरिया व जलन रोधी गुण होने के कारण लाभप्रद है। इसको खून शोधक व तंत्रिका तंत्र को मजबूत रखने हेतु भी प्रयोग में लिया जाता है।